॥ श्री ॥

वरांगचरित

VARAANGACHARITA

जटासिंहनन्दि · ७वीं शती · अभिलेख ७०/९०

जटासिंहनन्दि

संक्षिप्त परिचय

आचार्य जटासिंहनन्दि कृत — राजकुमार वरांग के चरित के माध्यम से श्रावक-मुनि धर्म का काव्यमय निरूपण; संस्कृत जैन काव्य-परम्परा का प्राचीन रत्न।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

वरांगचरित — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ७० पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता जटासिंहनन्दि; रचना-काल ७वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक १२१) के अनुसार इनका समय ई.श. ७–८ है। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "वरांगचरित" उल्लिखित है। समकालीन ग्रन्थों में पद्मपुराण परिगणित हैं।

समकालीन ग्रन्थ

पद्मपुराण

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ जैनकोश ↗ Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ७० — मूल छायाचित्र

← पद्मपुराण

उत्तरपुराण →